अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों के अधिगम शैली का अध्ययन।

अनीता शर्मा, शोधकर्त्री
शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर।

डॉ. पल्लव पाण्डे, शोध मार्गदर्शक
शिक्षा संकाय
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी) विश्वविद्यालय, उदयपुर।

प्रस्तावना :

भारत सरकार द्वारा देश की विद्यालय शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के विचार से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.)की स्थापना इस उद्देश्य के साथ (प्रतिभाशाली छात्रों को पहचानना तथा उनका परिपोषण करना) की गई। इस हेतु राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना (एन.एस.टी.एस.एस.) से 1963 में शुरू की गई। जिसका लक्ष्य प्रतिभाशाली छात्रों को पहचानने और उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए था। सन् 1964 में इसे पूरे देश भर तक विस्तारित किया गया। शिक्षा की 10+2+3 प्रणाली लागू होने के पश्चात् सन् 1976 में एस.एस.टी.एस. योजना में परिवर्तन किए गए। यह योजना केवल विज्ञान विषय तक सीमित नहीं रही अपितु इसे सामाजिक विज्ञान, अभियांत्रिकी और चिकित्सा विज्ञान तक विस्तारित किया गया।

वर्तमान में अभ्यर्थियों को केवल दो लिखित वस्तुनिष्ठ मानसिक योग्यता परीक्षा (एम. ए. टी.) तथा शैक्षिक योग्यता परीक्षा (एस.ए.टी.) में सम्मिलित होना होता है। इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने वाले अभ्यर्थियों की एक निश्चित संख्या का साक्षात्कार लिया जाता है। मानसिक योग्यता परीक्षा(MAT) तथा शैक्षिक योग्यता परीक्षा (SAT) और साक्षात्कार में प्राप्त किए कुल अंकों के आधार पर अंतिम रूप में छात्रवृत्ति के लिए योग्य माना जाता है। वर्ष 2006 में इस योजना में एक और बदलाव किया गया जिसके तहत यह परीक्षा राष्ट्रीय प्रतिभा का आयोजन कक्षा 8 के अंत में किया जा रहा है। जिससे कक्षा 9वीं एवम् कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

सन् 2000 से राष्ट्रीय मानकों के अनुसार अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजातियों के अभ्यर्थियों के लिए 15 प्रतिशत और 7.5 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है। इसके साथ ही 3 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान दिव्यांगजनों के लिए भी किया गया है।

सन् 1963 में दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र में केवल 10 छात्रवृतियों से इस योजना का शुभारंभ हुआ जिसे 1964 में 350 छात्रवृत्तियों सहित पूरे भारत भर में विस्तारित किया गया। कालांतर में वर्ष 2000 में इसमें कुल 1000 छात्रवृत्तियों के साथ कई बदलाव किए गए हैं।

सन् 1995 में योजना में रूपान्तर दोबारा किया गया, जिसमें शैक्षिक योग्यता परीक्षा (SAT) में विकल्प का प्रावधान समाप्त कर सभी अनिवार्य विषयों के विज्ञान 40, सामाजिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

विज्ञान 40 तथा गणित 20 प्रश्नों के साथ नया स्वरूप दिया गया। वर्ष 2006 में योजना का कार्यान्वयन कक्षा 10वीं के बजाय कक्षा 8वीं में किया गया, वर्ष 2007 से कक्षा 8वीं के अंत में किया गया। कक्षा 7वीं की मानसिक योग्यता परीक्षण (एम.ए.टी.) तथा शैक्षिक योग्यता परीक्षण (एस.ए.टी.) प्रत्येक में 90 प्रश्न होंगे 2014–15 में इस योजना में पुनः परिवर्तन कर 10 वीं की कक्षा के लिए इसे शुरू किया गया जिसमें 100 प्रश्नों को निर्धारित किया गया।

प्रस्तावित अध्ययन 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों के अधिगम शैली' से संबंधित शोध अध्ययन किया जा रहा है। इस अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा विद्यार्थियों की प्रतिभा को कैसे प्रभावित करती है? पारिवारिक वातावरण का बालकों पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है? विद्यार्थियों की प्रतिभा परीक्षा का तनाव प्रबंधन, पारिवारिक वातावरण एवं अधिगम शैली पर क्या प्रभाव पड़ता है? विद्यार्थियों की तनाव प्रबंधन, पारिवारिक वातावरण एवं अधिगम शैली में क्या संबंध है? इत्यादि प्रश्नों का संतोषजनक एवं तर्कसंगत समाधान खोजने का प्रयास शोधकर्त्री द्वारा इस प्रस्तावित शोध के माध्यम से किया जाएगा।

शोध की परिकल्पना :

1. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

परिसीमन :–

- शोध कार्य में राजस्थान राज्य के राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित 10वीं तथा 11वीं के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य के परतंत्र चर अधिगम शैली को माना गया।
- प्रस्तुत शोध कार्य उदयपुर, राजसमन्द एवं चित्तौड़गढ़ जिले तक ही सीमित रखा गया।

विशिष्ट शब्दों की व्याख्या :

1. तनाव प्रबंधन :

तनाव या कसाव हमारे सबके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। हम सब इसके शिकार होते रहते है। कभी यह साधारण मात्रा में उभरकर हमारे जीवन की घटनाओं को प्रभावित करता है और कभी यह गंभीर रूप धारण करके हमारे जीवन में उथल–पुथल मचा देता है। हमारी जीवन शैली में बदलाव ला देता है और हमारे मानसिक संतुलन पर आघात करता है। यह मानना पड़ेगा कि यह जब अनुकूलतम मात्रा में होता है, तो हमारे व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक एवं लाभप्रद होता है। किन्तु जब यह अनुकूलतम मात्रा जो विभिन्न व्यक्तियों में भिन्न होती है, बढ़ जाती है तो यह स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न कर देती है और हम बीमारी की ओर अग्रसर हो जाते हैं। तनाव की हमारे जीवन में महत्ता के कारण ही इसके सम्बन्ध में काफी समय से अध्ययन किए गये है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

तनाव एक नकारात्मक, संवेगात्मक अनुभव है जो पूर्वानुमानिक जैविक रासायनिक, दैहिक, ज्ञानात्मक एवं व्यावहारिक परिवर्तनों के साथ संलग्न होता है। जो कि या तो तनावपूर्ण घटनाओं को परिवर्तित करने की ओर होते हैं अथवा इसके प्रभावों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की ओर होते हैं।

तनाव का सामना व्यक्ति अपने ढंग से करने की चेष्टा करते हैं। अनेकों बार वह सफल भी हो जाते हैं। विशेष रूप से जब तनाव साधारण होते हैं किंतु कई बार उनके प्रयास पर्याप्त नहीं होते। तनावी तत्व ऐसे होते हैं जो नवीन होते हैं, गंभीर होते हैं अथवा स्पष्ट नहीं होते, तब व्यक्ति के अपने प्रयास तनाव कम करने में असफल हो जाते हैं। इस कारण मनोवैज्ञानिकों ने तनाव प्रबंधन की युक्तियां निकाली है, जिन्हें सिखाया जा सकता है।

तनाव प्रबंधन कार्यक्रम तीन चरणों में संपन्न किया जाता है। पहले चरण में सिखने वाले को सिखाया जाता है कि तनाव से क्या तात्पर्य है और कैसे स्ट्रेसर्स की पहचान की जाए। दूसरे चरण में वह उन कुशलताओं को सिखाते हैं जो तनाव के विनिमय के लिए आवश्यक होती हैं। तीसरे चरण में वह इन तनाव प्रबंधन तकनीकियों का अभ्यास चुनी हुई तनावपूर्ण स्थितियों में करते हैं और उनकी प्रभावशीलता को मॉनिटर करते हैं।

2. अधिगम शैली :

प्रस्तुत शोध में अधिगम शैली का अर्थ मध्यमवर्गीय उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों को अधिगम के दौरान भौतिक, सामाजिक, भावात्मक एवं वातावरणीय तत्वों को दी जाने वाली मान्यताओं के नवीन ज्ञान एवं नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया से है। साथ ही विद्यार्थियों के सीखने का जो विशेष तरीका या विधियॅा है, जिनके द्वारा प्रभावशाली अधिगम होता है, उनको पहचानने से है।

बालक का अधिकांश समय परिवार के साथ व्यतीत होता है तथा घर ही उसकी प्रथम पाठशाला होती है जहॉ से वह सीखना प्रारम्भ करता है। ऐसी अवस्था में यदि उसके लिए उपयुक्त अधिगम व्यवहार या वातावरण न बनाया जाय तो बालक के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है तथा विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च शैक्षिक उपलब्धियॅा प्राप्त नहीं कर सकता है। व्यक्ति अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर जो किया करता है उसके परिणाम स्वरूप वह स्वभावतः किसी नवीन परिस्थिति के सम्पर्क में आता है और जब वह इन प्रवृतियों से संतुष्टि इस परिस्थिति के द्वारा अपनी पुरानी अनुभूति के आधार पर करने में समर्थ नहीं हो पाता है तो वह इस परिस्थिति के साथ समायोजन करने के लिए प्रयास करने लगता है। इस प्रयास के परिणाम स्वरूप वह क्रमशः गलत व्यवहार छोडने लगता है और सफलीभूत व्यवहार को अपनाने लगता है। इस प्रकार उसके स्वाभाविक व्यवहार या पुरानी अनुभूति में क्रमशः प्रगतिशील परिवर्तन, नवीन उपलब्धि का आगमन एवं अधिगम व्यवहार में परिमार्जन होता है। घर का वातावरण और आपसी पारिवारिक संबंध बच्चे के अधिगम व्यवहार एवं शैक्षिक उपलब्धि पर गहरा प्रभाव डालते हैं। जाने–अनजाने वह उनके

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

व्यवहार का अनुकरण करता है ओर इस तरह अच्छे या बुरे सामाजिक गुणों और आदतों को ग्रहण करता है।

घर में बच्चो की संख्या, परिवार के आपसी संबंध, माता–पिता की शैक्षिक उपलब्धि एवं बच्चों के प्रति किया जाने वाला व्यवहार जैसे–नियंत्रण, स्वतंत्रता, तिरस्कार, दण्ड, पुरस्कार, दृढता, पोषण, अधिकार से वंचित करना साथ ही परिवार कीआर्थिक और सामाजिक सिथति पारिवारिक मूल्य, परम्पराएं तथा मान्यताएं आदि सभी बालक के अधिगम व्यवहार एवं उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालते है। इस प्रकार सींखने की प्रकिया में घरेलू वातावरण द्वारा प्रदान किए हुए उत्तेजक तत्व बालक के अधिगम व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाते है। इन उत्तेजक तत्वों का पता लगाकर बालक में अधिगम व्यवहार को नियंत्रित किया जा सकता है तथा उसका शैक्षिक उपलब्धि स्तर बढाया जा सकता है। शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा ही अध्यापक विद्यार्थियों को शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। गृह वातावरण के महत्व को समझने वाले माता–पिता बालक के लिए वातावरण उपस्थित कर सकते है जिससे उनके विचारों की उचित अभिव्यक्ति, शिष्ट सामाजिक व्यवहार, कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान, स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण आदि गुणों का अधिकतम विकास हो सके।

एक और जहां हम बालकों को प्राचीन ख्याति प्राप्त सांस्कृतिक धरोहर से गौरवान्वित करने एवं आध्यात्मिक मूल्यों को जीवन में अंतिम लक्ष्य मानने की बात करते है वहीं दूसरी ओर बालक पाश्चात्य सभ्यता, औद्योगिकरण तकनीकी के प्रभाव के कारण आधुनिक युग की सभ्यता की दौड़ में आगे चला आ रहा है। इन दोनो परिस्थितियों में विद्यार्थी समायोजित नहीं हो पाता। छात्र किंकर्तव्यविमूढ़ सा होकर अपने व्यवहार में अनिश्चितता, अनियमितता और अस्थिरता विकसित कर लेता है, अभिभावक, समाज, शाला, शिक्षक सभी का यह दायित्व है बालक जो भावी नागरिक है, को ऐसा वातावरण प्रदान करे जिसमें रहकर वह अपने अधिगम व्यवहार और शैक्षिक उपलब्धि का अर्जन इस प्रकार कर सके कि जब कही भी वह अपने आपको खड़ा करे तो दीप्तिमान हो उठे।

डॉ. एम.एल. पी.डी. अधिगम शैली से तात्पर्य विद्यार्थी के उन विविध तथा विशिष्ट तरीकों से है जिनके माध्यम से वह सर्वाधिक प्रभावशाली ढंग से अधिगम कर अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

रिता डन के अनुसार, ''अधिगम शैली व्यक्ति की, अधिगम के समय पर्यावरणीय, संवेगात्मक, सामाजिक तथा भौतिक तत्वों सम्बन्धी प्राथमिकताओं का योग है।''

स्किमेक तथा उनके सहयोगियों के अनुसार, ''अधिगम शैली उन विभिन्न सूचना–प्रसंस्करण–गतिविधियों के समूह के संगठन का उत्पाद है, जिन्हें व्यक्ति अधिगम कार्य के समय प्राथमिकता देता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

सुभाष अग्रवाल के अनुसार, ''अधिगम शैली का अर्थ किसी भी व्यक्ति की अधिगम के दौरान भौतिक, सामाजिक, भावात्मक एवं वातावरणीय तत्वों को दी जाने वाली मान्यताओं के योग से है।

3. पारिवारिक वातावरण :

बालक बचपन में सबसे अधिक अपने माता–पिता के संपर्क में रहता है। माता–पिता ही बालक के भावी व्यक्तित्व के निर्माता होते हैं। बाल्यकाल का हर क्षण उनके सानिध्य में व्यतीत होता है। माता–पिता का व्यक्तित्व, उनका सामाजिक व्यवहार, बातचीत का तरीका, पारस्परिक आचरण, रुचि सभी बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं और यही बालक के आदर्श भी होते हैं। माता का सहयोग बालक के लिए एक दीपक का कार्य करता है जिसकी लौ से बालक का भविष्य प्रज्ज्वलित होता है। जिन संस्कारों का उद्‌भव हम बालक में चाहते हैं वह माता–पिता द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता–पिता बालक के करियर के प्रति चिंतित होने लगते हैं ऐसे में पारिवारिक अकादमिक स्तर का भी बालक के संबलन पर प्रभाव पड़ता है।

परिवार अपने आप में एक औपचारिक शिक्षा केंद्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है तथा माता–पिता और विद्यालय उसका घर होता है जो जीवन पर्यन्त बालक का प्रदर्शन करते हुए उसे प्रगति की ओर ले जाते हैं। परिवार में शिक्षा एवं प्रशिक्षण के साथ–साथ अनुदेशन की प्रक्रिया भी चलती है। अतः परिवार के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर बालक के मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। माता–पिता में मधुर सम्बन्ध न होने पर बालक में अच्छे गुणों का विकास नहीं होता है। इस तरह का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास को अधिक प्रभावित करता है जिसके कारण वह अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता है और शैक्षिक रूप से वह पीछे जाता है। अतः पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत सुविधाएं व पारिवारिक वातावरण आदि बालकों के अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं।

अभिभावक जिस छवि को बालक के अंतःकरण में स्थापित करते हैं बालक भविष्य में वही बनने की कोशिश करता है। इस कार्य में शिक्षक व्यवहार, बालक की रुचि सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि यह सभी कारक सकारात्मक हो तो बालक की शैक्षिक उपलब्धियां उच्च हो सकती है और बालक राष्ट्रीय परीक्षा में सफल हो सकता है। जब बालक अध्ययन करते हैं तो उन्हें अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन व पुनर्बलन मिलना चाहिए क्योंकि इसका छात्रों की प्रतिभा पर प्रभाव पड़ता है।

पारिवारिक वातावरण बालक के प्रारंभिक शिक्षा का आधार बनता है जिससे बालक अपने अभिभावक एवं परिवार के अन्य सदस्यों में अपना व्यवहार निर्धारित करता है। पारिवारिक स्तर अच्छा होने पर बालक का सर्वांगीण विकास उचित ढंग

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

से होता है। परिवार के लोगों का रहन–सहन, उनकी आदत, अभिवृत्तियां, आकांक्षाएं आदि बालक के प्रतिभा को काफी हद तक प्रभावित करती है।

परिवार बालक का अनौपचारिक विद्यालय है जिसमें बालक अपनी शिक्षा का आधार तैयार करता है। इसके लिए अभिभावक ही बालक की अंतर्निहित योग्यताओं को पहचान कर उसे प्रोत्साहित करते हैं। बालक केवल सीमित समय के लिए विद्यालय से जुड़ा रहता है उसका अधिकांश समय अपने पारिवारिक वातावरण में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में न केवल बालक की शिक्षा अपितु उसके अन्य क्षेत्रों का विकास भी प्रभावित होना स्वाभाविक है।

डॉ. वेणी प्रसाद के अनुसार, "परिवार व्यक्ति से भी अधिक प्राचीन है। व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है उसका पालन–पोषण भी परिवार में होता है यही उसे सामाजिकता का पाठ भी पढ़ाता है। यह समाज की सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक इकाई है। यह मानव जाति की आदिम संस्था है।"

शोध विधि :

प्रस्तावित शोध अध्ययन हेतु शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध उपकरण :

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्न प्रामाणिक एवं स्व–निर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया–

1. अधिगम शैली – स्व–निर्मित प्रश्नावली

न्यादर्श :

शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य के उदयपुर, राजसमन्द एवं चित्तौड़गढ़ जिले के कक्षा 10वीं एवं 11वीं में अध्ययनरत छात्रों का ''राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन'' पर अध्ययन किया गया। तीनों जिलों के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए चयन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

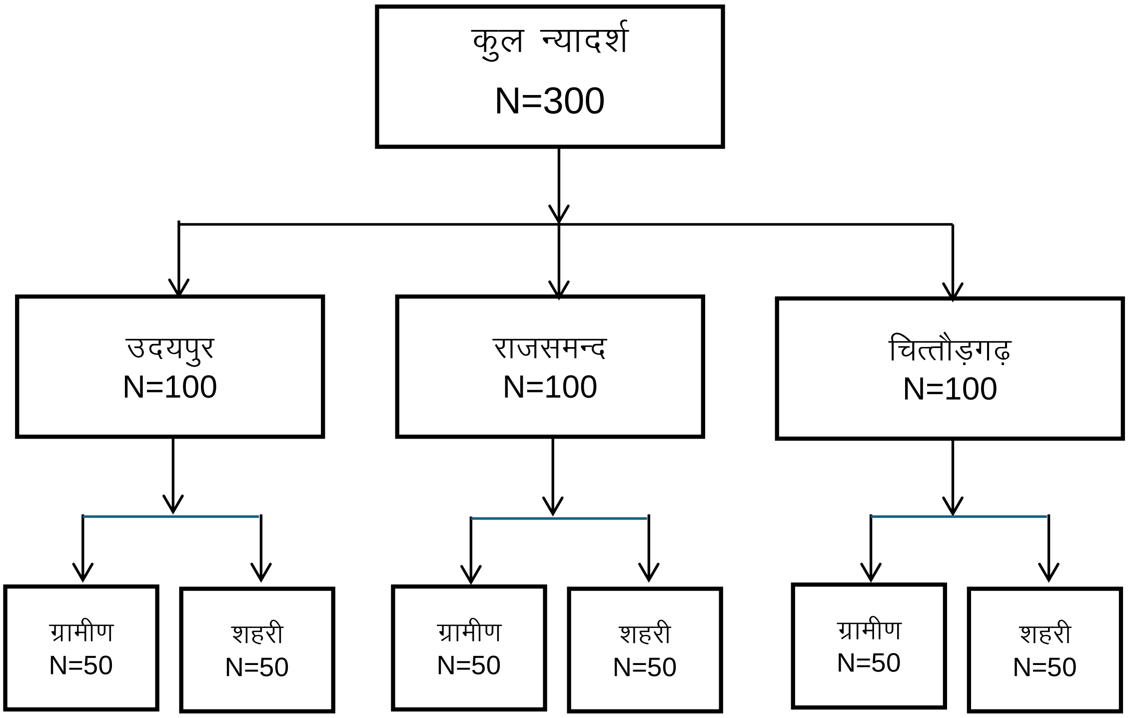

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली

सारणी संख्या 1

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैली का मध्यमान

क्र.स.	शैली का नाम	कट पोइंट	मध्यमान
1	तार्किक शैली	10	15.55
2	श्रव्य शैली	10	16.23
3	दृश्य शैली	10	17.20
4	मौखिक शैली	10	14.66

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

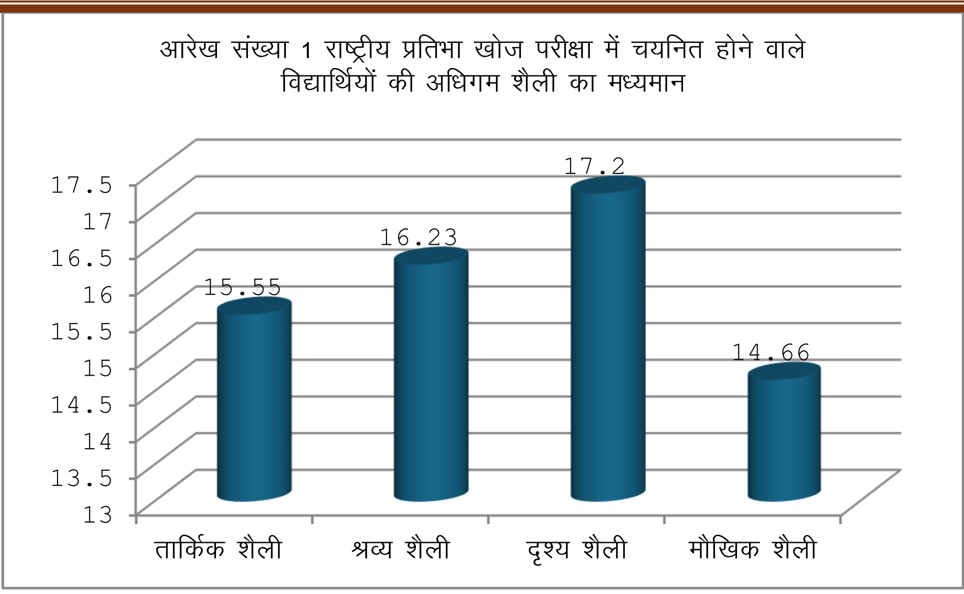

व्याख्या :

उपर्युक्त सारणी आरेख संख्या 1 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त राय का क्षेत्रवार विश्लेषण इस प्रकार है–

1. तार्किक शैली : तार्किक शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 15. 55 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले विद्यार्थी अधिगम के लिए तार्किक शैली का प्रयोग करते है।

2. श्रव्य शैली : श्रव्य शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 16.23 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थी अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग करते है।

3. दृश्य शैली : दृश्य शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 17.23 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया गया। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थी अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग करते है।

4. मौखिक शैली : मौखिक शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थियों द्वारा व्यक्त राय के प्राप्ताकों का मध्यमान 14. 66 .प्राप्त हुआ, जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10 से अधिक पाया

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

गया। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले समग्र विद्यार्थी अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग करती है।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली

सारणी संख्या – 2

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का मध्यमान तथा मानक विचलन

क्र. सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	तार्किक शैली	**13.66**	**3.33**
2.	श्रव्य शैली	**15.99**	**4.28**
3.	दृश्य शैली	**18.88**	**6.39**
4.	मौखिक शैली	**15.24**	**4.67**

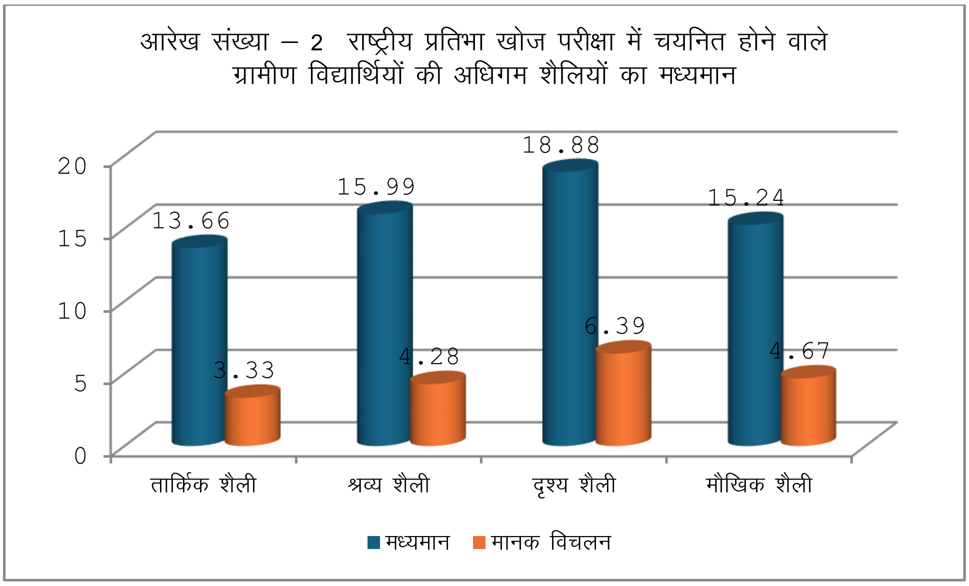

व्याख्या :

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 2 का अवलोक करने पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों से क्षेत्रवार निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते है :–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

क्षेत्रवार विश्लेषण :–

1. तार्किक शैली : तार्किक शैली राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र तार्किक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 13.66 तथा मानक विचलन 3.33 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थी अधिगम करने के लिए तार्किक शैली का प्रयोग करते हैं।

2. श्रव्य शैली : श्रव्य शैली राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र श्रव्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 15. 99 तथा मानक विचलन 4.28 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थी अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

3. दृश्य शैली : दृश्य शैली राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र दृश्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 18. 88 तथा मानक विचलन तथा 6.39 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थी अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

4. मौखिक शैली : मौखिक शैली राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र मौखिक शैली पर प्राप्त अंकों का मध्यमान 15.24 तथा मानक विचलन 4.67 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण विद्यार्थी अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली

सारणी संख्या – 3

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का मध्यमान तथा मानक विचलन

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
1.	तार्किक शैली	**17.44**	**4.34**
2.	श्रव्य शैली	**16.47**	**4.32**
3.	दृश्य शैली	**15.52**	**3.18**
4.	मौखिक शैली	**14.08**	**5.58**

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

आरेख संख्या – 3 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का मध्यमान

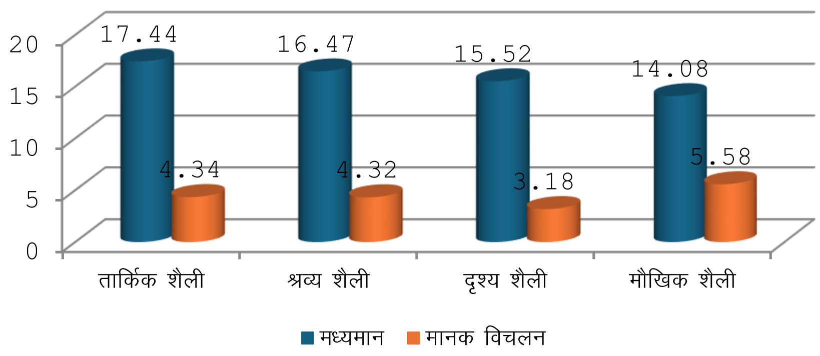

व्याख्या :

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 3 का अवलोक करने पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों से क्षेत्रवार निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते है :–

क्षेत्रवार विश्लेषण :–

1. तार्किक शैली : तार्किक शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र तार्किक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 17.44 तथा मानक विचलन 4.34 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थी अधिगम करने के लिए तार्किक शैली का प्रयोग करते हैं।

2. श्रव्य शैली : श्रव्य शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र श्रव्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 16.47 तथा मानक विचलन 4.32 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग करते हैं।

3. दृश्य शैली : दृश्य शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र दृश्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 15.52 मानक विचलन 3.18 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग करते है।

4. मौखिक शैली : मौखिक शैली के सभी कथनों पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के क्षेत्र मौखिक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान 14.08 तथा मानक विचलन 5.58 प्राप्त हुआ। अतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग करते है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

सारणी सख्या. – 4

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान		मानक विचलन		टी–मान	सार्थकता स्तर
		ग्रामीण विद्यार्थी	शहरी विद्यार्थी	ग्रामीण विद्यार्थी	शहरी विद्यार्थी		
1.	तार्किक शैली	13.66	17.44	3.33	4.34	6.56	0.01 स्तर पर सार्थक है।
2.	श्रव्य शैली	15.99	16.47	4.28	4.32	0.75	दोनों स्तर पर नहीं है।
3.	दृश्य शैली	18.88	15.52	6.39	3.18	4.47	0.01 स्तर पर सार्थक है।
4.	मौखिक शैली	15.24	14.08	4.67	5.58	1.51	दोनों स्तर पर नहीं है।

स्वतंत्रता अंश (*df*) = 298 के सारणीमान 0.05 तर पर सारणीमान – 1.97
0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.60

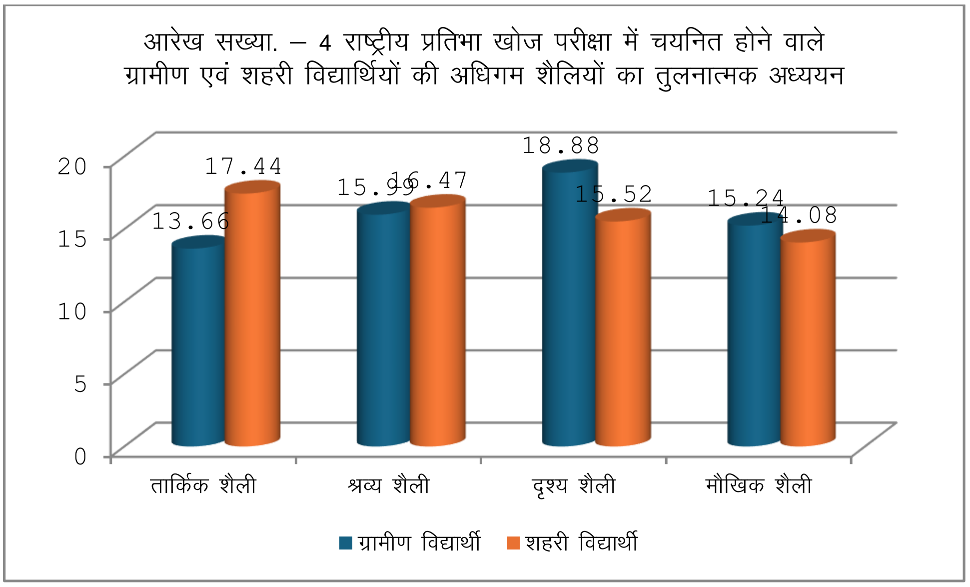

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

व्याख्या :

उपरोक्त सारणी एवं आरेख संख्या 4 का अवलोकन करने पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों से क्षेत्रवार निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते है :–

क्षेत्रवार विश्लेषण :–

1. तार्किक शैली :– राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र तार्किक शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 13.66, 17.44 तथा 3.33, 4.34 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 6.56 आया जो स्वतंत्रता अंश *(df)* =298 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनो समूहो के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर पाया गया। निष्कर्षतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी अधिगम करने के लिए तार्किक शैली का प्रयोग शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक करते है।

2. श्रव्य शैली :– राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थिया की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र श्रव्य शैली पर प्राप्त अंको का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 15.99, 16.47 तथा 4.28, 4.32 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 0.75 आया जो कि स्वतंत्रता अंश *(df)* =298 के 0.05 स्तर के सारणीमान 1.97 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए श्रव्य शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

3. दृश्य शैली :– राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र दृश्य शैली पर प्राप्त अंकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 18.88, 15.52 तथा 6.39, 3.18 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 4.47 आया जो स्वतंत्रता अंश स्वतंत्रता अंश *(df)* =298 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों अधिगम के लिए दृश्य शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

4. मौखिक शैली :– राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्षेत्र मौखिक शैली पर प्राप्त अंकों का मध्यमान तथा मानक विचलन क्रमशः 15.24, 14.08 तथा 4.67, 5.58 प्राप्त

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी–मूल्य निकाला गया, जिसका मान 1.51 आया जो कि स्वतंत्रता अंश *(df)* =298 के 0.01 स्तर के सारणीमान 1.97 से कम पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

अतः परिकल्पना संख्या–1 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष :

शोधकर्त्री के निष्कर्षतः पाया है कि ''राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों में निष्कर्षतः राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी अधिगम के लिए मौखिक शैली का प्रयोग समान रूप से करते हैं।

अतः परिकल्पना संख्या–1 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित होने वाले ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अधिगम शैली के तुलनात्मक अध्ययन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत की जाती है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

1. शोधकर्ता द्वारा शोध में प्रयुक्त किए गए उदयपुर, चित्तौड़गढ़ तथा राजसमन्द राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों में औसत श्रेणी का तनाव पाया गया है। अतः उनके तनाव व चिंता को दूर करने के लिए विद्यालय में समय–समय पर सकारात्मक अभिप्रेरणा प्रदान करें, प्रशंसा, पुरस्कार तथा उचित मार्गदर्शन दिए जा सकते हैं।

2. विद्यार्थी अपने लक्ष्यों की पूर्ति हेतु अपनी की रुचियों, आकांक्षाओं, विशेषताओं और क्षमताओं को समझने का प्रयास करें। इससे अपने लक्ष्य खुद निर्धारित करने व उन्हें पूरा करने की क्षमता का विकास हो सकें।

3. विद्यार्थी के तनाव स्तर का मापन कर उसे उचित मार्गदर्शन प्रदान कर सकता जिससे उसके कार्य करने के तरीके व उसे पूरा करने की क्षमता में सुधार आयां।

उपसंहार :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा ''राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों के तनाव प्रबंधन, अधिगम शैली एवं पारिवारिक वातावरण का अध्ययन'' विषय पर लघु शोधकार्य करना एक छोटा सा प्रयास है। प्रस्तुत अध्याय में शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक निहितार्थ तथा भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

शोधकार्य ने इस अध्ययन में विद्यार्थियों के तनाव के कारणो को जानने का प्रयास किया है जिससे शोधकर्त्री ने यह अनुभव किया कि वर्तमान में इस समस्या पर गहन अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि अपने अध्ययन के छोटे न्यादर्श व उपकरण की सीमितता के कारण इसके आधार पर भविष्यवाणी नहीं की जा सकती, परन्तु शिक्षा जगत् के क्षेत्र में आगे के कार्य के लिए यह शोध प्रबंध में प्रारम्भिक भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, रामनारायण, ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा के मापन एवं मूल्यांकन'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1970।
2. एनारवासी, ''ए साइकोलॉजी टेस्टिंग'', कैमिलन कम्पनी न्यायर्क, 1957 एन साइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन रिसर्च।
3. अरोड़ा, रीता, मारवाह, सुरेश, ''शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर 2005।
4. ओसवाल, भार्गव, ''सांख्यिकीय विधियाँ'', रमेश बुक डिपो, जयपुर 1996।
5. बेस्ट जॉन डब्ल्यू, ''रिसर्च एन एजूकेशन'', प्रिन्टिंग हॉल प्रा.लि., नई दिल्ली।
6. भार्गव, डॉ. सुनिता एवं उपाध्याय डॉ विनोद कुमार, ''अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण'', अरिहन्त प्रकाशन जयुपर 2004।
7. बोगार्डस, ''शैक्षिक अनुसंधान विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
8. दुबे, सत्यमिश्र, शर्मा दिनेश, ''समाजशास्त्र एक परिचय'',राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् पब्लिकेशर्स।
9. गैरेट , हैनरी ई, ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में साख्यिकी'' , कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
10. गुड एण्ड् हैट, ''मैथड्स इन सोशल रिसर्च'', इन्टरनेशनल स्टुडेन्ट एडीशन मैकगाहिल बुक कम्पनी।
11. गुड सी.बी. एण्ड् स्केटस, ''मैथड्स ऑफ रिसर्च'', एप्लेटन क्ट्रेरी क्राफ्टस, न्यूयार्क 1934।
12. गुप्ता एस.सी., ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2006।
13. जे.एम.रमल, ''एन इन्ट्रोडेक्शन टू रिचर्स प्रोसीजन इन एजुकेशन'', हार्पर न्यूयार्क, 1958।
14. कपिल, भार्गव डॉ. एच. के., ''अनुसंधान विधियाँ, शिक्षा एवं मनोविज्ञान'', बुक हाउस, आगरा, 1996।
15. मिश्रा, गार्गीशरण मराल, ''शिक्षा की समस्याएँ और समाधान'', विकास प्रकाशन, कानपुर 2003।
16. राबर्ट एम. डब्ल्यू, टैवर्स, ''एन इन्ट्रोडेक्शन टू एजूकेशन रिसर्च'', न्यूयार्क मैकमिलन कम्पनी 1964।
17. रजा मुमिस, राय सुजाता, ''शिक्षा और विकास के सामाजिक आधार'', ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 1962।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 13-Issue 03, (July-Sep 2025)

18. सैयदन के. जी., ''प्रॉब्लम ऑफ एजूकेशन रिकन्सट्रक्शन'', एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
19. सरीन एवं सरीन, ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2008।
20. सिंह डॉ. कृष्ण वीर, ''शोध, समीक्षा और मूल्यांकन'', वाल्यूम–2 फरवरी, 2010।
21. शर्मा भारती, ''मैथड्स ऑफ एजूकेशनल रिसर्च'', बोहरा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2004।
22. शर्मा के.के., शर्मा प्रभा, त्रिवेदी सुधा, गर्ग पी., ''शिक्षा शब्दकोश'', स्वाति पब्लिकेशन, जयपुर, 2005।
23. शर्मा हेमन्लता, ''डायनेमिक्स ऑफ क्रियेटिविटी एण्ड़ इन्ट्रेस्टस'', विस्ता इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2006
24. शर्मा आर.ए., ''एडवांस स्टेटिक्स इन एजुकेशन एण्ड़ साइकोलॉजी'', आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ , 2006।
25. शर्मा आर.ए. ''पेरामैट्रिक एण्ड़ नॉन पेरामैट्रिक स्टेटिक्स'', सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, 2006।
26. तिवारी, चन्दा, ''मापन, मूल्यांकन एवं प्रश्न पत्र संरचना'', जैन प्रकाश मन्दिर, जयपुर, 2006।
27. गैरेट, हैनरी, ई., सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
28. गैरेट, हैनरी, ई., ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी हिन्दी अनुवाद'' कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।
29. कौल, लोकेश, शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
30. भण्डारी, रणजीत सिंह, निर्देशन–संदिर्शका, शैक्षिक एवं व्यावसायिक यूनिट मनोवैज्ञानिक आधार प्रभाग–3, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर।
31. कपिल, एच.के., अनुसंधान विधियॉ, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
32. पाठक, पी.डी., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
33. बेस्ट, जे. डब्ल्यू., रिसर्च इन एज्युकेशन प्रिंटिंग हॉल ऑफ इण्डिया प्रा. लि. नई दिल्ली
34. स्टीवेन्सन) जे., ''पारिवारिक वातावरण का व्यवहार पर प्रभाव'', रूटलेज, न्यूयार्क, यू.एस.ए. (2010)
35. शर्मा, जी. और भार्गव (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
36. हसन (2022),हरिद्वार जिले के तहसील लक्सर के प्राथमिक सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर तनाव प्रबंधन का अध्ययन", पी एचडी शिक्षा शास्त्र, अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
37. शर्मा, के.के. एवं प्रभा (2005), शिक्षा शब्दकोश, स्वाती पब्लिकेशंस, जयपुर।
38. सरकार, यू.(1983), "छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में पारिवारिक घटकों का योगदान।" मनोविज्ञान शिक्षा अनुसंधान, कलकता।